जून – जुलाई 2018

वर्ष 30 एकादश अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्रण मोक्ष मार्ग

विशेष स्तम्भ

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
18 राष्ट्रीय परिदृश्य
21 भारत में वन क्षेत्र में वृद्धि: पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की द्विवार्षिक रिपोर्ट
24 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
33 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 सारभूत तत्व कोष
40 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
43 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

लेख

46 समसामयिक लेख–राज्य-ध्वज की माँग : देश की अखंडता पर आँच है
47 सामयिक लेख–घट रहा है पानी
49 सामाजिक लेख–देश में असुरक्षित महिलाएं
50 सौर ऊर्जा सम्बन्धी लेख–सौर क्रान्ति के लिए तैयार भारत

हल प्रश्न-पत्र

51 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2017
59 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय (चरण-1) परीक्षा, 2017
67 झारखण्ड कर्मचारी चयन आयोग पंचायत सचिवालय परीक्षा, 2017
74 हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2017 [लेवल-2 : कक्षा VI-VII (अनिवार्य प्रश्न-पत्र)]

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया प्रोबेशनरी ऑफीसर्स (प्रा.) परीक्षा, 2017

79 तर्कशक्ति
83 संख्यात्मक अभियोग्यता
87 English Language

आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित लिपिकीय संवर्ग (प्रा.) परीक्षा, 2017

90 तर्कशक्ति
93 संख्यात्मक अभियोग्यता
96 English Language
99 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड सहायक लोको पायलट/तकनीशियन (स्टेज-I) भर्ती परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
104 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
109 आगामी आर.आर. बी. की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए विशेष हल प्रश्न-फिटर शॉप थ्योरी

विविध/सामान्य

112 सामान्य जागरूकता–आगामी रेलवे परीक्षाओं के लिए विशेष
115 समसामयिक घटनाचक्र–आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड ग्रुप 'सी' एवं 'डी' परीक्षाओं हेतु विशेष
125 सामान्य जानकारी–उपभोक्ता मूल्य सूचकांक और थोक मूल्य सूचकांक तथा उनसे जुड़े महत्वपूर्ण व नवीनतम तथ्य
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्रण मोक्ष मार्ग

✍ साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

हम सब अपनी-अपनी राह पर सदा आगे बढ़ रहे हैं. सबके पास कोई-न-कोई मंजिल है और हर आदमी अपनी मंजिल के प्रति कोई-न-कोई विचार, भाव, आस्था, विश्वास रखता ही तो है. कुछ लोग सोचते हैं मंजिलों को पाना बहुत मुश्किल है. आसान थोड़े ही है. हर किसी को थोड़े मिलती है, जो किस्मत वाले होंगे उन्हीं को मिलेगी तो कुछ लोग सोचते हैं. मंजिल यानी कि अब एक लम्बी यात्रा लम्बा सफर तय करना ही पड़ेगा, तो कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि मंजिल जो भी बनायी है. वो तो आसानी से खुद-ब-खुद सामने आएगी. मुझे कुछ करने की जरूरत नहीं केवल अपने आपको तैयार करो. अपने आप पर मेहनत करो जब मैं अपने आपको प्रेक्टिस करके ठीक कर चुका होऊँगा, तो मेरी मंजिलें खुद-ब-खुद सामने चलकर के आएंगी आप क्या सोचते हैं. सोचना है, तो तीसरी तरह की सोच जरूर रखना. बहुत अच्छी सोच है कि मंजिलें खुद चलकर आती हैं. केवल व्यक्ति को अपने आपको स्वस्थ बनाना होता है, क्योंकि इस दुनिया में जिसे भी पाना है, जो कुछ भी करना है. उनका लक्ष्य निश्चित होना बहुत जरूरी है.. अगर आपको कुछ पाना है, तो बाहर तैयारी मत करो उसके लिए भीतर को इतना तैयार बना लो कि आपका हर कदम ही आपकी मंजिल को नजदीक लाने वाला बन जाए और जो कुछ करना है उसके लिए अपने आपको सही दृष्टि दो, क्योंकि सही दृष्टि होने पर काम खुद-ब-खुद होते हैं. जब तक दृष्टि सही नहीं होती है, तब तक ही हम बहुत कुछ करते हैं, लेकिन कुछ हासिल नहीं कर पाते इसीलिए अपनी दृष्टि को सही बना लो और वो कैसे बनाना आप जिस किसी भी विषय में श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करना चाहते हो, उस विषय का गहन अध्ययन करो. यह अध्ययन ही आपके दृष्टिकोण और दृष्टि को सही बनाएगा. सटीक और सार्थक ज्ञान के बिना लक्ष्य भेद पाने की दृष्टि और दृष्टिकोण सही नहीं हो सकता. प्रत्येक कार्य के प्रति दृष्टिकोण है वो दृष्टिकोण सही नहीं हो सकता है. इसीलिए पहले ज्ञान प्राप्त करो चाहे तुमने जो भी मकसद निर्धारित किया हो हर मकसद के लिए आपके पास में सही ज्ञान हो फिर सही दर्शन हो और तब सही ज्ञान सही दर्शन का होना ही चरित्र को सही बना देगा यानी आपकी क्रियाओं को आपके क्रियाकलापों को स्वाभाविक रूप से स्वतः ही ठीक कर देगा. सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चरित्राणि मोक्ष मार्गः कहने वाला सूत्र स्पष्ट कहता है कि जैसे ही दर्शन और ज्ञान सम्यक् होते हैं. चरित्र खुद-ब-खुद सम्यक् हो जाता है, लेकिन जहाँ पर दर्शन और ज्ञान सम्यक् नहीं होते वहाँ चारित्र्य सम्यक् नहीं हो पाता है और सम्यक् होने का मतलब सही होना ठीक होना ऐसा नहीं है. सम्यक् होने का मतलब है निष्पक्ष होना, हम किसी तरह के पक्ष विपक्ष में न रहें जो यथार्थ है. उसको देखने वाले, उसको पढ़ने वाले, उसको समझने वाले बनें. मनोभावों को समझना, जानना बहुत जरूरी है और बहुत आसान भी है जरा भी कठिन नहीं है केवल अपने मन की कल्पनाओं के रंग भरना बन्द करना होगा केवल चीजों को दुरूह मानने की आदत को छोड़ना होगा और हम छोड़ सकते हैं. इसी क्षण से हाँ क्यों नहीं छोड़ पाते उतावल होती है. परिणाम जानने की उतावल होती है, कुछ पाने के लिए लोग उतावले होते हैं. अभी बीज बोया अभी के अभी फल मिल जाए. इस बात की ये जो उतावलापन है हमारी सोच में, हमारे व्यवहार में, हमारी प्रकृति में हमें इससे मुक्ति पानी होगी, क्योंकि जब तक कोई व्यक्ति उतावला बना है, तब तक वो अतिक्रमण करेगा जैसे ही उतावलापन खत्म हो जाएगा अतिक्रमण भी समाप्त हो जाएगा. आओ जरा अपने भीतर के इस उतावलेपन को पहचानें चाहे वो उतावलापन बोलने में हो, खाने में हो, लिखने-पढ़ने में हो, लेन-देन में हो या किसी भी प्रकार की गति में हों—चाहे चलने में हो, चाहे गाड़ी दौड़ाने में हो, चाहे किसी भी प्रकार के रिश्ते निभाने में हो उतावलापन आपको नुकसान देता है. इसीलिए इस उतावलेपन को छोड़ करके अपने प्रत्येक कार्य को पूरे दृष्टिकोण के साथ में करो देखो खुद-ब-खुद मंजिल आपके समक्ष होगी.

●●●